International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत पर भक्ति आंदोलन के प्रभाव

डॉ. केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)
हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

भक्ति का शाब्दिक अर्थ भक्ति है। लेकिन भक्ति आंदोलन ने आंदोलन को प्रभावित किया जिसने भगवान की तीव्र भक्ति पर जोर दिया। यह भक्ति सर्वशक्तिमान के नाम की पुनरावृत्ति के माध्यम से एक भक्त द्वारा व्यक्त की गई थी। अभिव्यक्ति की विधा आमतौर पर भगवान की स्तुति में गाती और नृत्य करती थी। भक्ति आंदोलन के संतों ने इस बात पर भी जोर दिया कि वर्ग, रंग, जाति आदि का कोई भेद नहीं था। सभी को मुक्ति का अधिकार था यानी जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति। यह नोट किया गया है कि भक्ति पंथ एक व्यापक आंदोलन था, जिसने पूरे देश में व्यावहारिक रूप से अपनाया। यह एक लोगों का आंदोलन था जिसने उनके बीच गहन रुचि पैदा की। जैसा कि मुस्लिम विचारक और धर्मशास्त्री हिंदू धर्म और उसके कई समारोहों के आलोचक थे, भक्ति आंदोलन के संतों और सुधारकों ने हिंदू धर्म में सुधार करने की कोशिश की, ताकि वह इस्लाम की सफलताओं का सामना कर सके।

भक्ति आंदोलन कई कारणों का परिणाम था। आंदोलन की जड़ें भारत की मिट्टी में गहरी पड़ी हैं। भक्ति पंथ में कुछ भी नया नहीं था, जो भारत में पहले से मौजूद नहीं था। पंथ के तत्वों का पता वेदों से लगाया जा सकता है। दूसरी बात यह है कि मुस्लिम शासन और इस्लाम के प्रभाव ने हिंदू जनता के दिल में खौफ पैदा कर दिया। कुछ कट्टर शासकों के तहत हिंदुओं को बहुत नुकसान हुआ था। वे चाहते थे कि उनके निराश दिलों को ठीक किया जाए। भक्ति आंदोलन ने उन्हें हिंदू धर्म को बचाने के लिए आशा और समर्थन और आंतरिक शक्ति प्रदान की। मुस्लिम समुदाय के सूफी संतों ने भी आंदोलन को प्रेरित किया। दो समान प्रतिध्वनि में कुछ इसी तरह की राग।

मुस्लिम समाज ईश्वर की एकता, मानव जाति की समानता और बंधुत्व और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण में दृढ़ विश्वास रखता था। यह एक संयोग है कि हिंदू सुधारक और रहस्यवादी संत भी दूसरों के अलावा इन सुविधाओं पर जोर देने की कोशिश कर रहे थे। उसी समय कुछ सुधार हिंदू और इस्लाम के बीच दो समुदायों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने के लिए समझौता करने के लिए उत्सुक थे। प्रोफेसर ए। एल। श्रीवास्तव का कहना है कि यह आंदोलन काफी हद तक यह महसूस करने में सफल रहा कि पूजा के सरलीकरण और पारंपरिक जातियों के नियमों को उदार बनाने की पहली वस्तु है। हिंदू जनता के बीच ऊंच-नीच उनके कई पूर्वाग्रहों को भूल गई और भक्ति पंथ के सुधारकों के संदेश में विश्वास किया कि सभी लोग भगवान की दृष्टि में समान थे और यह जन्म धार्मिक मुक्ति के लिए कोई बाधा नहीं थी।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आंदोलन अपनी दूसरी वस्तु, अर्थात, हिंदू, मुस्लिम एकता को प्राप्त करने में विफल रहा। न तो तुर्क-अफगान शासकों ने और न ही मुस्लिम जनता ने राम-सीता या राधा-कृष्ण पंथ को स्वीकार किया। उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि राम और रहीम, ईश्वर और अल्लाह एक ही ईश्वर के आंदोलन के नाम थे, हालांकि, संयोग से एक और ठोस उपलब्धि के लिए जिम्मेदार बन गए, अर्थात्, हमारे वर्नाकुलर साहित्य के विकास और संवर्धन।

अधिकांश सुधारकों ने अपनी मातृभाषा के माध्यम से जनता को उपदेश दिया, और इसलिए, उन्होंने हमारी आधुनिक भाषाओं, जैसे कि हिंदी, बंगाली, मराठी, मैथिली को समृद्ध किया। गुजराती आदि। भक्ति आंदोलन का काल इसके परिणामस्वरूप हमारे युगीन साहित्य के विकास के इतिहास में एक स्वर्णिम काल साबित हुआ।

प्रो। यूसुफ हुसैन कहते हैं कि "यूरोप के सुधार की तरह, मध्य युग में हिंदू धर्म का सुधार इस्लाम के लिए बहुत बड़ा कर्ज था। इसने ईश्वर की दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य के मूल्य का एक नया सामाजिक संदेश दिया, और भक्ति की खोज द्वारा इसे नए सामाजिक और आध्यात्मिक आदर्शों का कुशल वाहन बनाने की दृष्टि से वर्तमान हिंदू विचार के पुनर्निर्माण का आग्रह किया। और फिर भी यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि इस्लाम का प्रभाव हिंदू समाज की संरचना के बाद मौलिक रूप से कम नहीं हुआ, लेकिन यह हमारे समय तक भी विशिष्टता और अस्पृश्यता के तत्व को बरकरार रखता है। "

प्रो। हुसैन आगे कहते हैं कि "यह आमतौर पर सभ्यता के इतिहासकारों और धार्मिक विकासों द्वारा माना जाता है या सामाजिक प्रक्रियाओं में बुनियादी बदलावों को दर्शाता है। मध्यकालीन भारत का भक्ति आंदोलन, इस्लामी संस्कृति और दृष्टिकोण के हिंदू समाज पर पहले प्रभावी प्रभाव का प्रतिनिधित्व करता है। यह सच है कि भक्ति पंथ मूल रूप से स्वदेशी था, लेकिन इस देश में मुसलमानों की उपस्थिति से इसे एक महान प्रेरणा मिली। इस आंदोलन ने न केवल दोनों पंथों के धर्मावलंबियों के लिए एक बैठक-मैदान तैयार किया, इसने मानव समानता का भी प्रचार किया और खुले तौर पर अनुष्ठान और जाति की निंदा की।

यह मौलिक रूप से नया था, मूल रूप से पुरानी परंपराओं और धार्मिक प्राधिकरण के विचारों से अलग था। इसने सामूहिक जीवन को नए आधार पर पुनर्जीवित करने की मांग की, एक ऐसे समाज की परिकल्पना जिसमें सभी के लिए न्याय और समानता हो और जिसमें सभी पंथों के पुरुष अपने पूर्ण नैतिक और आध्यात्मिक कद का विकास कर सकें।

डॉ। आरपी त्रिपाठी कहते हैं कि, "हिन्दू और मुसलमान दोनों ही, १३ वीं से १६ वीं शताब्दी तक के आध्यात्मिक आंदोलन, धर्म के औपचारिक पहलू से लेकर इसके अंतर्निहित अध्यात्मवाद तक, बाहरी लोगों से लोगों के दिमाग को निर्देशित करने का प्रयास कर रहे थे। उनके सभी अंधविश्वासों और अश्लीलता, हरकतों और हरकतों के साथ वास्तविक रहन-सहन से लेकर, वे धर्म के भौतिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक आधारों पर जोर देते हैं, जो विशुद्ध रूप से औपचारिक, शारीरिक, कर्मकांड और सामाजिकता से अलग है। " भारतीय जीवन

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर भक्ति आंदोलन के गहरे प्रभाव के बारे में बात करते हुए प्रो। राधाकुमार मुखर्जी कहते हैं, "यह मध्य युग के धार्मिक असंतोष हैं, भक्त और सूफी, जिन्होंने अपनी उदार शिक्षाओं और भक्ति के माध्यमों के माध्यम से बड़े पैमाने पर धार्मिक विश्वास और भक्ति का फैशन बनाया है। आधुनिक भारत का। एक विश्वसनीय अनुमान यह है कि भारतीय मुसलमानों के दो तिहाई सूफी आदेशों में से एक या अन्य के प्रभाव में हैं, धर्म का बाहरी आवरण संप्रदायों और समुदायों को विभाजित करता है। दूसरी ओर, सूफीवाद और भक्ति, जो इस्लाम और हिंदू धर्म के रहस्यमय मूल या सार का गठन करते हैं, दो संस्कृतियों के दृढ़ और आवश्यक बंधन रहे हैं। "

भक्ति संतों ने सार्वभौमिक शिक्षा को सिखाया और समाज की सामाजिक संरचना में क्रांति लाई। सभी संत मानवता से प्यार करते थे और भगवान के प्रति समर्पित थे। लेकिन उनके शिष्य व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से ऊपर उठने में विफल रहे और उन्होंने संप्रदायों और उप-संप्रदायों का निर्माण किया। परिणामस्वरूप भारतीय समाज रूढ़िवादी पर आधारित नए पंथों की संख्या में विभाजित हो गया।

मध्यकालीन भारतीय समाज पर भक्ति आंदोलन का प्रभाव:

भक्ति आंदोलन के प्रभाव को समझने की दृष्टि से, हमें उस पृष्ठभूमि पर विचार करना होगा जिसके तहत आंदोलन को गति मिली। मुस्लिम शासन के प्रभाव में, हिंदुओं ने नैतिक और आध्यात्मिक रूप से बहुत कुछ झेला था। सामान्य तौर पर मुस्लिम शासक हिंदुओं पर इस्लामी कानूनों को लागू करना चाहते थे। मुस्लिम शासन ने हिंदू जनता के दिलों में खौफ पैदा कर दिया था। वे चाहते थे कि उनके निराश दिलों को ठीक किया जाए। भक्ति आंदोलन ने उन्हें खुद को बचाने के लिए आशा और समर्थन और आंतरिक शक्ति प्रदान की। समय के दौरान, कई बुरी प्रथाएं हिंदू समाज में फैल गईं। जाति और वर्ग भेद बहुत था। कई विभाजन हुए थे। दो समुदायों के बीच यानी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कटु पुरुषों का एक अच्छा सौदा था। कुछ हीलिंग टच की जरूरत थी। सौभाग्य से विदेशी आक्रमणकारियों के साथ, कुछ सूफी मुस्लिम संत भी भारत आए थे और यहां बस गए थे। वे बहुत उदार विचारों वाले थे। उन्होंने प्रेम और भक्ति, भाईचारे और समानता आदि के गुणों पर जोर दिया। इससे दोनों समुदायों को निकट लाने में मदद मिली। इसने परस्पर विरोधी हितों के बीच तालमेल बिठाने में भी मदद की। भक्ति आंदोलन के संतों ने जाति और उति के अंतर को खारिज कर दिया। ' एक महत्वपूर्ण कारक जिसके कारण भक्ति आंदोलन की लोकप्रियता बढ़ गई थी कि इस आंदोलन के अधिकांश प्रवर्तकों ने राम और रहीम के एक होने पर जोर देकर हिंदू और मुसलमानों के बीच के मतभेदों को समेटने का प्रयास किया। उन्होंने कट्टर पंडितों और मुल्लाओं की नफरत की एक जैसी निंदा की। हिंदुओं ने महसूस किया कि मुस्लिम शासकों और मुसलमानों को भारत से खदेड़ना मुश्किल था। दूसरी ओर मुसलमानों ने भी सराहना की कि हिंदू पूर्ण बहुमत में थे और उन सभी को इस्लाम अपनाने के लिए मजबूर करना असंभव था। इसलिए नए आंदोलन के प्रभाव में दोनों पक्षों ने एक दूसरे के करीब आने के लिए प्रयास करना शुरू कर दिया। हिंदुओं के लिए भक्ति आंदोलन के हिंदू संतों और सूफी संतों द्वारा मुसलमानों के लिए प्रयास शुरू किया गया था। हिंदू और साथ ही मुस्लिम संतों ने धार्मिक सादगी पर जोर दिया। उन्होंने मानवीय गुणों और

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नैतिक दृष्टिकोण पर जोर दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो विचार और कर्म में शुद्ध हो। भक्ति संत पुरुष और मनुष्य की समानता में विश्वास करते थे। उनके अनुसार जन्म के आधार पर उच्च और निम्न का कोई भेद और विचार नहीं था। उनके दरवाजे सभी वर्गों के लिए खुले थे।

सामाजिक प्रभाव:

भक्ति आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव यह था कि भक्ति आंदोलन के अनुयायियों ने जाति भेद को खारिज कर दिया। उन्होंने समानता के आधार पर एक साथ मिलाना शुरू किया। उन्होंने आम रसोई से अपना भोजन साथ लिया। आंदोलन ने जाति के बंधन को ढीला करने की कोशिश की।

धार्मिक प्रभाव:

कर्मकांड और अंधविश्वास की निरर्थकता को लेकर हिंदुओं और मुसलमानों में जागृति आ गई। दो धर्मों के विचार और प्रथाओं के बीच अंतर की सराहना की भावना उभरी। आंदोलन ने धार्मिक झुकाव को प्रोत्साहित किया। गुरु ग्रंथ साहेब सिखों की सबसे पवित्र पुस्तक है, जिसे बाद में विभिन्न संप्रदायों से संबंधित संतों के संदेशों को शामिल किया गया था। यह भक्ति संतों द्वारा प्रचारित अधर्म की भावना के कारण था।

भक्ति आंदोलन अपने दोयम दर्जे के उद्देश्य को साकार करने में बहुत हद तक सफल रहा, यानी हिंदू धर्म में सुधार लाया गया और हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध विकसित हुए। इसने एक नए संप्रदाय यानी सिख धर्म को जन्म दिया। यह कहना शायद दूर की बात है कि भक्ति आंदोलन के प्रभाव के कारण अकबर का व्यापक दृष्टिकोण था। आंदोलन ने हिंदू समाज को और विभाजित कर दिया। उदाहरण के लिए कबीर के अनुयायियों को कबीर पंथियों के रूप में जाना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अलबरूनी किताबुल-हिन्दी (अनु0) ई0सी0 सचाऊ नई दिल्ली
- जियाउद्दीन बरनी तारीख-ए-फिरोजषाही (अनु0) सईद अहमद खा, कलकत्ता, 1862
- अमीर खुसरों नूह-ए-सिपिहर (अनु0) मुहम्मद वाजिद मिर्जा, लंदन, 1950
- मान्सरेट दि कमेन्टेरियस (अनु0) होयलैण्ड, लंदन, 1922
- गुलबदन बेगम हुमायूनामा (अनु0) एच. बेवरीज, नई दिल्ली 1972
- ख्वान्दमीर कानून-ए-हुमायूॅनी (अनु0) बेनी प्रसाद कलकत्ता, 1990
- इब्नुल अरबी मुहीउद्दीन कुसुम-उल-हिक्स, मिश्र, 1946